



## भजन

### तर्ज-नी में यार मनाना नी

में श्री राज रिझाना नी,चाहे चौदह लोक ही रुठे  
दिल ओहदा दीवाना नी, मैनू होर ना कोई सूझे

1-मुखड़ा उसदा नूर जमाली तेज सहा नही जाये  
मेरा प्रीतम प्राण पिया ओ अक्षरातीत कहाए  
ओंनू नही भुलाना नी

2-उसदे प्रेम विच हंसा रोवां, उस दे प्रेम विच नचां  
उसदे प्रेम विच रहवां दीवानी,उस दी अख विच रचां  
मेरा असल ठिकाना नी

3-रुहां ताहीं खेल रचाया,रुंहा नू ओ चाहवे  
दे देवां सुख ब्रह्मसृष्टि न, ए हो उसनू भावे  
हुन गिर नही जाना नी

4-इश्क नू मिल गई अपनी मंजिल,सब जग हो गया वैरी  
अंखा कंडे विछ गये पैरा, विच पै गई बेड़ी  
में नही घबराना नी

